गुजरात का स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी लेखन

(प्रो. आलोक गुप्त अभिनंदन ग्रंथ)

संपादक

ईश्वर सिंह चौहान
हसमुख बारोट
नियाज पठान
राहुल प्रसाद

गुर्जर राष्ट्रवीणा

नूतन भाषा-सेतु

विश्व गाथा

8 अक्टूबर-नवंबर-दिसंबर 2021 अंक नंबर :

संपादक : पंकज त्रिवेदी

समन्वय पश्चिम

पश्चिम भारत की साहित्य एवं संस्कृति केंद्रित पत्रि

ISBN : 978-93-81491-82-9

प्रथम संस्करण : 2022

© संपादक

मूल्य : ₹ 695/-

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। प्रकाशक या लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को, फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलैक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी, किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्लिखित प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहीं किया जा सकता।

प्रकाशक : यश पब्लिकेशंस
1/10753, सुभाष पार्क
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110 032

विक्रय कार्यालय
अंसारी रोड, दरियागंज
नई दिल्ली-110 002

संपर्क : 9599483887
ई-मेल : info@yashpublications.co.in
वेबसाइट : www.yashpublications.co.in

डिस्ट्रीब्यूटर : यश पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा. लि.
Available at : amazon.in, flipkart.com

लेज़र टाइपसेटिंग : जी.आर.एस. ग्राफिक्स, दिल्ली

मुद्रक : नागरी प्रिंटर्स, दिल्ली

गुजरात के गुजराती भाषी हिन्दी सेवा-प्रचारक 94
शरद जोशी

गुजरात की हिन्दी पत्र-पत्रिकाएँ : एक विहंगावलोकन 117
किशोर काबरा

गुजरात में हिन्दी का प्रचार और प्रसार और प्रवृत्तियाँ 125
सुधा सिंह

गुजरात का हिन्दी साहित्य

गुजरात की हिन्दी प्रबन्ध-कविता 133
ओमप्रकाश गुप्त

गुजरात का स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी काव्य : एक विहंगावलोकन 143
गोवर्धन बंजारा

गुजरात की समकालीन हिन्दी कविता 155
आलोक गुप्त

समकालीन हिन्दी ग़ज़लः गुजरात 162
ऋषिपाल धीमान 'ऋषि'

गुजरात का हिन्दी कहानी लेखन 178
ज्ञान सिंह चन्देल

गुजरात का हिन्दी उपन्यास साहित्य 210
ज्योति शर्मा

21वीं सदी का गुजरात का हिन्दी उपन्यास साहित्य 220
नियाज ए. पठान

गुजरात का हिन्दी दलित लेखनः एक सर्वेक्षण 232
धीरज वणकर

गुजरात के हिन्दी निबन्धकार 249
राजेन्द्र परमार

गुजरात के हिन्दी निबंधकार

राजेन्द्र परमार

गुजरात भारत के पश्चिमांचल क्षेत्र में स्थित एक समृद्ध राज्य है। उत्तर और पूर्व में हिन्दी भाषी राज्यों की सीमाओं के साथ जुड़ा हुआ होने के कारण यहाँ हिन्दी भाषा का प्रचार-प्रसार अधिक हुआ है। वैसे तो गुजराती यहाँ की मातृभाषा है, फिर भी गुजरात ने हिन्दी को द्वितीय भाषा के रूप में स्वीकारा है। गुजरात प्रदेश में हिन्दी साहित्य का मध्यकाल से निरंतर विकास होता रहा है। गुजरात के कच्छ-भुज में स्थापित ब्रज पाठशाला इस बात का प्रमाण है। आधुनिक काल में जिस प्रकार कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, गजल आदि विधाओं का विकास हुआ है, वैसे ही निबंध विधा का भी। गुजरात में निवंध लेखन की एक समृद्ध परम्परा रही है। गुजरात के प्रमुख निवंधकारों में अम्बाशंकर नागर, नथमल केडिया, रमाकान्त शर्मा, श्यामशरण अग्रवाल, किशोर कावरा, अविनाश श्रीवास्तव, चन्द्रकान्त मेहता, आचार्य रघुनाथ भट्ट, रामकिशोर मेहता, रंजना अरगड़े, पंकज त्रिवेदी, मालती दुबे, दक्षा जानी, ईश्वरसिंह चौहान, धीरज वणकर, दिलीप मेहरा, करतारसिंह आदि को शामिल किया जा सकता है।

गुजरात के हिन्दी निबंधों को वर्गीकरण की दृष्टि से दो भागों में विभाजित किया जा सकता है– 1. व्यक्ति प्रधान निबंध, और 2. विषय प्रधान निबंध। व्यक्ति प्रधान निबंध को व्यक्ति-व्यंजक निबंध, वैयक्तिक निबंध, आत्मपरक निबंध या ललित निबंध भी कहा जाता है। विषय-प्रधान निबंधों को कथ्य की दृष्टि से तीन भागों में विभाजित किया जाता है- 1. विज्ञान विषयक निबंध, 2. दर्शन विषयक निबंध और 3. साहित्य समीक्षा संबंधी निबंध।

गुजरात के ललित निबंधकारों में अम्बाशंकर नागर का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। 'पवन के पंखों पर' उनका प्रमुख निबंध-संग्रह है। इस संग्रह में कुछ

ललित निबंध हैं तो कुछ समीक्षात्मक। वैसे तो अम्बाशंकर नागर कवि, संशोधक और समीक्षक के रूप में अधिक ख्यात रहे हैं, इसीलिए उनके निवंधों में कवि और समीक्षक का समन्वित रूप देखा जा सकता है। कवि होने के कारण उनके निबंधों की भाषा में काव्यात्मकता का सहज प्रयोग हुआ है। इस संग्रह के निबंधों में विषय वैविध्य है। 'शक' उनका प्रसिद्ध निबंध है। इस निबंध में उच्चकोटि की विचार शक्ति और संवेदनशीलता के दर्शन होते हैं। अम्बाशंकर नागर के निबंधों में बुद्धि और हृदय तथा विषय और व्यक्ति का अद्वितीय समन्वय हुआ है। उदाहरण के तौर पर 'शक' निबंध का एक उदाहरण देखा जा सकता है– "बीमारियाँ पहले भी थीं, इलाज भी थे। पर अब एक बीमारी की दवा कीजिए, दूसरी बीमारी का शक पालिए। जैसे-जैसे सभ्यता का विकास होता जा रहा है, शक की भी द्विगुणीत वृद्धि होती जा रही है, ज्यो-ज्यों सुरसा बदन बढ़ावा, तासु दुगुन कवि रूप दिखावा। यदि दिन में सौ-सौ बार नहीं मरना है, तो एक बार मरने के लिए अपने को तैयार कर लीजिए। यही मुक्ति का मूल मंत्र है, शंका के कुमार्ग को त्यागकर श्रद्धा और विश्वास की पगडंडी पर चलिए। विश्वास की पगडंडी पर चलनेवाला भूले भटकेगा भी तो मंजिल तक पहुँच जायेगा। शक के कुमार्ग पर चलकर तो आज तक कोई गंतव्य तक नहीं पहुँचा।" इनकी भाषा में विषयानुकूल भाव प्रकाशन की अनूठी शक्ति है। विवेचना की गम्भीरता के अनुपात में भाषा भी गम्भीर और प्रौढ़ रूप धारण करती है।

किशोर काबरा मूलतः तो कवि हैं। उनके द्वारा रचित प्रबंधकाव्य बहुत चर्चित रहे हैं। काबरा जी ने निबंध विधा में भी अपनी कलम चलाई है। 'कागज, कलम और कविता' उनका प्रमुख निबंध संग्रह है। लेखक ने खुद इस निबंध-संग्रह को 'साहित्यिक निबंध' की संज्ञा दी है। इस निबंध संकलन में ललित निबंध के साथ-साथ समीक्षा संबंधी निबंध भी शामिल हैं। विषयों की विविधता इस संकलन की प्रमुख विशेषता है। धर्म, संस्कृति, दर्शन, प्रार्थना, पौराणिक आख्यान, समाज, मानवीय मूल्यों को केन्द्र में रखकर निबंध रचे गये हैं। इस निबंध संग्रह में कुल पेंतालिस निबंध संकलित हैं। 'जाके प्रिय न राम वैदेही', 'एक और उपेक्षिता अम्बा', 'जरूरत है एक कविता की', 'उमाशंकर जोशी और निशीथ', 'सन्नाटा तोड़ती पंखों की सरसराहट', 'जानकी जयमाल थामे रह गई' आदि निबंध बहुत मार्मिक बन पड़े हैं। डॉ.ओमप्रकाश गुप्त का कहना विल्कुल सही है कि- "गद्यलेखन को कष्टप्रद बतलाने वाले डॉ. काबरा जी का गद्य कवि हृदय की रागात्मकता के कारण कष्टप्रद होने से बच गया है।"

डॉ. रमाकान्त शर्मा ने भी ललित निबंधों की रचना की है। कवि, कहानीकार के रूप में भी इन्होंने भी अपनी कलम चलाई है। उनके प्रमुख दो निवंध-संग्रह हैं– 'चंदन वृक्ष' और 'ऋणभार'। इन दोनों ही संग्रहों को पाठकों का सम्मान प्राप्त हुआ है। 'चंदन वृक्ष' निबंध संग्रह में सौ से अधिक छोटे-छोटे ललित निवंध संग्रहीत हैं। जैसे चंदन शरीर को शीतलता प्रदान करता है वैसे ही इस संग्रह के निबंध मन को शांति प्रदान करते हैं। लेखक का प्रकृति से गहरा लगाव रहा है। चिन्तन-मनन करके लिखे गए इन निबंधों में भावधार प्रवाहित होती नजर आती है। एक उदाहरण इस संदर्भ में देखा जा सकता है– "एक धारा ज्वालामुखी की शिलाओं में निकली, राह के पड़ों की छाया, पक्षियों के गीतों से बिखरती-टूटती हुई, बहुत दूर आ गई है। सुबह के शीतल बयार के स्पर्श से खिले हुए इस फूल ने कड़कती धूप के विष को सहा है। पानी और गंध की पागल कहानी गूंगे स्वर कहाँ तक कहें? सहयात्रियों, तुम्हारा ही चंदन वृक्ष महकता, टूटता, कटता मेरे हृदय में धांय-धांय जल रहा है।"

गुजरात के ललित निबंधकारों में नथमल केडिया एक उल्लेखनीय नाम है। 'स्वाती की बूँद सीपी' में उनका प्रमुख निबंध-संग्रह है। लेखक के व्यक्तित्व की छाप ललित निबंधों की प्रमुख विशेषता है। नथमल केडिया जी के निबंधों में उनका व्यक्तित्व साफ झलकता हुआ दिखाई देता है। इस निबंध-संग्रह में कुल पच्चीस निबंध संकलित हैं। उन्होंने समाज, संस्कृति, राजनीति जैसे विषयों को लेकर अपने निबंधों की रचना की है। इन्होंने अपने निबंधों में कहीं समाज की विसंगतियों, विकृतियों पर चोट की है, तो कहीं भारतीय संस्कृति के प्रति उनका प्रेम झलकता दिखाई देता है। भारतीय संस्कृति के सौंदर्य-पक्ष का उद्घाटन युगीन संदर्भों के साथ हुआ है। लेखक के प्रेरणा-स्त्रोत उत्तर भारत के तीर्थधाम रहे हैं जो हमारी आस्था के प्रतीक भी हैं। लेखक द्वारा रखे गए निबंधों के शीर्षक इस बात का स्वयं प्रमाण हैं। 'आस्था की मंदाकिनी', 'उत्तराखंड़ यात्रा का वह दिन', 'दो हिमालय-दो गंगा', 'अमृत कुंभ', 'मैं सखी वृंदावन की' आदि इस संग्रह के महत्वपूर्ण निवंध है। इन निबंधों में प्रकृति, संस्कृति और दार्शनिकता का त्रिवेणी संगम हुआ है। पाठक इन निबंधों में डुबकी लगाकर बहुत कुछ प्राप्त कर सकता है। इस संग्रह की भूमिका में डॉ. अम्बाशंकर नागर का कहना बिल्कुल सही है कि इन निवंधों में "राजस्थान की मान-मर्यादा, गुजरात की आभिजात्य चारुता और वंगाल की भावुकता है।..... औचित्य, शालीनता और कल्पना की त्रयी ने केडिया जी के निवंधों को लोकमंगल की ऊँची भूमिका पर प्रतिष्ठित किया है।"

भाषा का चित्रात्मक प्रयोग और काव्यात्मक गद्य-शैली इन निबंधों की विशेषता है। यात्रावृत्त और संस्मरण शैली का प्रभाव अनेक जगह पर दिखाई देता है। 'आस्था की मंदाकिनी' निबंध का एक उदाहरण– "मुझे लगने लगता है कि जीवन में गति के अलावा कुछ है ही नहीं। पर इस बीच मुझे कई बार भगवती उमा की याद आ जाती है। सोचता हूँ वह भी तो पर्वत पुत्री है न! उसकी प्रवृत्ति भी इतनी चंचल-चपल जरूर रही होगी, फिर वह कैसे इतनी गहन, गंभीर, तप-निरता बन सकी होगी ! हाय ! उसका सारा बचपन, जो इसी तरह मुक्त निर्द्वन्द्व, खेलता- खाता बीतना चाहिए था, तप में लीन कठोर कृच्छ व्रतधारी, अतिशय संयम में बीता।"

श्यामसरन अग्रवाल ने हिन्दी ललित निबंध परम्परा को विकसित करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। 'दुनिया दो रंगी' और 'माटी नये-नये रूप धरे' उनके प्रसिद्ध ललित निबंध संग्रह हैं। 'दुनिया दो रंगी' निबंध संग्रह में कुल चौंतीस लघु-निबंध संकलित हैं। आकार में लघु होने पर भी इस संग्रह के निबंधों में गहन चिन्तन हुआ है। गहनता और मार्मिकता इन निबंधों की अपनी खास विशेषता है। मनुष्य जीवन के विविध पहलुओं को कलात्मक ढंग से उद्घाटित किया गया है। 'दुनिया दो रंगी' शीर्षक प्रतीकात्मक रूप से गंभीर भाव-बोध की ओर संकेत करता है। वैसे भी दुनिया दो रंगी ही है क्योंकि आज के मनुष्य को समझना, उसको पहचानना बहुत दुष्कर कार्य है। मनुष्य को समझने के लिए, उसको पहचानने के लिए पूरी जिदगी गुजर जाएगी तो भी ना तो हम उसे पहचान सकते हैं और ना ही उसे पूरी तरह जान सकते हैं। 'रुक जाओ जाने वाले', 'गहन अंधियारा', 'मन के हारे हार है, मन के जीते जीत', 'ठोकरें नसीब की', 'गतम् न शोचामि' आदि निबंधों में गहन चिंतन की अभिव्यक्ति हुई है। 'माटी नये-नये रूप धरे' उनका विज्ञान विषयक निबंध संग्रह है। इस निबंध संग्रह को उन्होंने 'विज्ञान विषयक ललित लेख संग्रह' कहकर पुकारा है। इन निबंधों में वैज्ञानिक तथ्यों की सर्जनात्मक अभिव्यक्ति हुई है। इस संकलन में संकलित निवंधों के शीर्षक भी अपने आप में रोचक और रोमांचक है। 'गेहूँ के दुश्मन', 'करामात कागद की', 'जवानी रुक भी जा', 'बिजली के शौकीन पौधे', 'शीशे का कचरा...कचरे का शीशा' आदि शीर्षक हमारे मन को आकर्षित कर लेते हैं।

डॉ.चन्द्रकान्त मेहता बहुमुखी प्रतिभा संपन्न रचनाकार हैं। साहित्य की सभी विधाओं पर उनकी लेखनी चली है। वे कई भाषाओं के ज्ञाता हैं। उनकी मातृभाषा गुजराती होते हुए भी उन्होंने हिन्दी, अपभ्रंश, अंग्रेजी, संस्कृत भाषा

में भी अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। विशेष रूप से वे गुजराती तथा हिन्दी के जाने-माने कवि, कहानीकार, निबंधकार, एकांकीकार, बाल-साहित्यकार, एवं जीवनीकार हैं। जीवनपर्यंत साहित्य के उपासक रहनेवाले चन्द्रकान्त मेहता ने 107 से अधिक ग्रंथों की रचना की है। अब तक उनके सात निबंध-संग्रह प्रकाशित हुए हैं, जिनके नाम इस प्रकार है- 'दिया जलाना कब मना है?', 'साथ-साथ चल रही किरन', 'तलाश एक नए आसमान की', 'एक झील अंदर भी', 'कहाँ रुका है काफिला', 'चलना हमारा काम है' और 'जीवन में विश्राम कहाँ'। डॉ.चन्द्रकान्त मेहता के निबंधों में विषय वैविध्य हैं। समाज, संस्कृति, धर्म, दर्शन, न्याय, शिक्षा, राजनीति, नैतिकता, जीवन-मूल्य, आतंक, हिंसा तथा मानव-भावों की सहज अभिव्यक्ति हुई है। हमारी प्राचीन समृद्ध परम्परा को आत्मसात करते हुए आधुनिक विचारों की वाणी को अपने वैयक्तिक विचारों में गूंथकर व्यक्त किया है। प्राचीन और नवीन मूल्यों के बीच अद्भुत सामंजस्य इन निबंधों में हुआ है। उनका मानना है कि जीवन में सफल होने के लिए मनुष्य में अटूट श्रद्धा और आत्मविश्वास होना बेहद जरूरी है। उनके अधिकांश निबंधों में आस्था और विश्वास पर विचार किया गया है। यों तो आस्था और विश्वास दोनों मनुष्य के प्रेरणा-स्त्रोत हैं। 'आस्तिकता की उपासना' निबंध में वे लिखते हैं– "अटूट आत्मविश्वास तथा स्थिर मन ही श्रद्धापूर्ण यात्रा को चलाने वाले परिबल हैं। जहाँ कुशंका भय दिखाती है, वहीं श्रद्धा सत्व दिखाती है। श्रद्धा स्वाश्रयी बनती है, कुशंका पराश्रयी। दुविधापूर्ण नहीं वरन् विवेकपूर्ण श्रद्धा ही व्यक्ति तथा विश्व का कल्याण कर सकती है। पीड़ा तथा प्रतिकूलता मनुष्य की ईश्वरदत्त कसौटियाँ हैं। जो सुख-सागर के किनारे छप-छप करने के बदले गरजते हुए समुद्र के तूफानों के बीच जिंदगी के गीत ढूँढ़ने निकल पड़ते हैं, जो अपने पैरों के छालों की परवाह किए बिना नया अंगरखा तलाश करने के लिए अधीर होते हैं, जो संपदामाता की गोद में बैठकर दुग्धपान करने की जगह विपदा की पूतना की गोद में ही हँसते-खेलते रहे हैं, जिन्होंने जख्मी आघातों का काजल अपनी आँख में लगाया है, जिन्होंने अपने जीवन मात्र को सदा ही निष्फलता की राख में माँजा है, जिन्होंने कमजोरों की पलटन में घूमने के बदले एकलपंथी करने में कोई हिचकिचाहट नहीं की, उन्हें ही जीवन ने सार्थकता दी है।" 'कहाँ रुका है काफिला' निबंध-संग्रह में संग्रहीत प्रमुख निबंधों में- 'इन निबंधों में आइये', 'अतरूकरण को प्रेमालय बनाएँ', 'सद्भावना का नंदनवन', 'कहाँ रुका है काफिला', 'प्रलोभन की आसक्ति' आदि बहुत चर्चित निबंध हैं। 'चलना हमारा

काम है' निबंध संग्रह पर टिप्पणी करते हुए विष्णुकान्त शास्त्री जी ने लिखा है कि– "ये निबंध सिद्धहस्त लेखक एवं स्वाध्यायनिष्ठ चिंतक की कलम का उत्कृष्ट नजराना है।" तरोताजा चिंतन से परिपूर्ण ये निबंध आत्मविश्वास, धैर्य एवं श्रद्धा का दामन पकड़कर लक्ष्यसिद्धि के लिए अविचल रहने का संदेश देते हैं। इनके निबंधों में सकारात्मक सोच के साथ गहरे चिन्तन का समन्वय हुआ है। 'विचार मेरे साथी' निबंध में चन्द्रकान्त मेहता लिखते हैं– "मनुष्य को अपनी ध्येयपूर्ति के लिए अपने भीतर एक दृष्टिकोण, एक प्रेरणादायक मनोबल को विकसित करना पड़ता है। यदि आप भीतर से स्वयं खाली हैं, परंतु दुनिया को अपने विचारों, वक्तव्यों व अपने मंतव्यों से भरने का प्रयास करते हैं, तो आपके प्रयत्न व्यर्थ ही जाएँगे। आपके उत्साह का स्त्रोत ही दूसरों के उत्साह के कुहरे को फैलने के लिए आबोहवा पैदा करेगा। यदि आप स्वयं को नगण्य समझेंगे, तो दूसरे तो आपको उपेक्षणीय मानेंगे ही। कोई विशेष कार्य करने के लिए, विशेष परिणाम हासिल करने के लिए, विशेष ध्येय की सिद्धि के लिए ऐसी भावना रखना अत्यंत आवश्यक है कि आप स्वयं श्रेष्ठ व्यक्ति हैं और आप अपने भीतर के सभी गुणों को अपने ध्येय को समर्पित करने के लिए पूरी तरह से तैयार हैं।" इन निबंधों में संस्कृतनिष्ठ शब्दावली का सहज प्रयोग देखा जा सकता है। मुहावरों-कहावतों और सूक्तियों के प्रयोग से भाषा पाठकों को बांधने में पूर्ण सक्षम है।

आचार्य रघुनाथ भट्ट की हिन्दी के साथ-साथ अंग्रेजी और गुजराती साहित्य में भी गहरी पैंठ रही है। उन्होंने कवि, लेखक, संपादक और अनुवादक के रूप में अनेक ग्रंथों की रचना की है। गुजरात में हिन्दी के प्रचार-प्रसार में उनका अमूल्य योगदान रहा है। 'राष्ट्रवीणा' जैसी पत्रिका निकालने का शुभ कार्य भी उनके ही हाथों हुआ। उनके दो निबंध-संग्रह हैं– 'भावन-मन-भावन' और 'मनन चिन्तन'। 'भावन-मन-भावन' समीक्षात्मक निबंध-संग्रह है, जबकि 'मनन-चिन्तन' वैचारिक निबंध-संग्रह।

'मनन-चिन्तन' निबंध-संग्रह में कुल इक्कीस निबंध संकलित है। सभी निबंध विषय प्रधान है। विषय वैविध्य इन निबंधों की प्रमुख विशेषता है। विषय की दृष्टि से, संस्कृति, राष्ट्रीयता, धर्म, पर्व-त्यौहार, राजनीति आदि विषयों पर निबंध लिखे गए हैं। ये बौद्धिक विषयनिष्ठ निबंध है। 'संस्कृति के पुरातन तत्व', 'राष्ट्रचेतना', 'आचार-विचार', 'धर्म निरपेक्षता', 'राजनीति और विवेक', 'गुरु नानक', 'सरदार वल्लभभाई पटेल' आदि इस निबंध-संग्रह के प्रमुख निबंध हैं।

इन निबंधों के विवेचन में जो गांभीर्य एवं तार्किकता है तथा शैली में जो कसाव है वह अन्यत्र देखने को नहीं मिलता। एक उदाहरण देख सकते हैं- "प्रकृति और संस्कृति मानव जीवन के दो धरातल हैं। इन दोनों कूलों के बीच मानव शरीर की सरिता प्रवाहित होती आई है। निरभ्र आकाश में जगमगाते अखंड तारों के दीप, अपनी लोल लहरों से मृदुल लहराता समीर, झर-झर झरते पर्वत-पुत्र से झरने, कल-कल, छल-छल बहती सरिताएँ, स्थितप्रज्ञ सी स्थिर शैल-मालाएँ, दिन-रात परिभ्रमण में निरत पृथ्वी, अंतरिक्ष के यायावर सूर्य-चन्द्र, क्षण-क्षण परिवर्तित प्रकृति वेश, हिमानी हवाएँ, बरसाती बादल, उघड़ती कलियाँ, सिमटता कमल कोश, सप्तरंगी इन्द्रधनुष- ये सब अपनी भय-विस्मय भरी महत्ता के सामने मानव को दिग्मूढ़ करते आए हैं, उसको पराभूत करते आए हैं, किन्तु मानव हार माननेवाला नहीं है। .... उसकी विजय यात्रा को यदि कोई नाम दिया जाय तो वह नाम है-संस्कृति।

गुजरात के ललित निबंधकारों में अविनाश श्रीवास्तव का नाम भी बहुत चर्चित रहा है। 'सपाट चेहरों के दर्द' उनका प्रमुख निबंध-संग्रह है। इस निबंध संग्रह में कुल सोलह निबंध संग्रहीत हैं। समाज, संस्कृति, प्रशासन, प्रकृति, साहित्य और यथार्थ नामक छः भागों में विभाजित इस संग्रह में विषय का सूक्ष्म चिंतन हुआ है। इस चिंतन में तार्किकता और मार्मिकता है, जो पाठक को सराबोर कर देती है। 'सूर्यास्त के संक्रांति के क्षण', 'उपहार देकर पाने का सुख', 'बसंती सपनों के गाँव में' तथा 'जीवन आलोकित पक्ष' आदि इस संग्रह के महत्वपूर्ण निबंध हैं। 'हम ऋणी हैं जिनके' उनका प्रकृतिपरक निबंध है। इस निबंध में लेखक अपने आप को प्रकृति का ऋणी मानता है। इस चराचर जगत में प्रकृति ही सबकुछ है। प्रकृति ही हमें संवेदनशील मनुष्य बनाती है– "सम्पूर्ण समर्पित प्रेमी युगल के रूप में जिस मानव ने सारस जैसे पक्षी की महत्ता बढ़ाई या सुख-दुख के साथी के रूप में जिसने तोता, मैना को चित्रित किया, वह मानव संभवतः इस विश्व का सबसे संवेदनशील मानव रहा होगा। मूक रहकर भी जिसने विविधा प्रकृति में पाषाण को तोड़कर कल-कल करते जल प्रपातों, प्यासी धरा की प्यास बुझाने के लिए तत्पर पावस घनों और महामिलन के लिए उन्मत सरिता को सागर की ओर अग्रसर होने का मानवीकरण मात्र अनुभूति में किया होगा वह सचमुच कितना पुण्य पुरुष रहा होगा।"

रंजना अरगड़े प्रसिद्ध कवयित्री, कहानीकार, अनुवादक के साथ-साथ ललित निबंधकार भी हैं। इन्होंने 'शमशेर रचनावली' का संपादन भी किया है। 'भिनसारे

में मधुमालती' उनका प्रसिद्ध ललित निबंध-संग्रह है। इस निबंध-संग्रह में कुल बारह निबंध संकलित हैं। 'फिर फूल में लग जा..', 'नया वसंत', 'आईने पर थूंकना', वह दरिया है', 'फिर आ गए शिरीष', 'पंक ज', 'मर गया ईश्वर', 'कुछ अंतरंग रंग कृष्णा सोबती के संग',' भिनसारे में मधुमालती' आदि निबंध चर्चित रहे हैं। लेखिका के अनुसार ये सारे निबंध अपनी प्रकृति में ललित चिंतनात्मक है। इन निबंधों में कहीं चिंतन है, कहीं हास्य-विनोद, तो कहीं व्यंग्य। ये निबंध कहीं चिंतनपरक हैं तो कही संस्मरणात्मक। अपने समय की आवाज, प्रकृति और समाज के बीच से पहचानने का प्रयत्न इन निबंधों में किया गया है। प्रकृति लेखिका का प्रिय विषय रहा है। 'फिर फूल में लग जा..' निबंध का एक उदाहरण देखिए- "इन दिनों ऋतु वसंत है और पेड़ों में पतझड़ जारी है। जारी है नए-नए पत्तों का आना। एक तरफ लाल चिकनी कोंपलें नंगी डालियों को अपनी कोमलता से ढँके रहती हैं- वहीं पेड़ों तले चर्र-मर्र चर्र-मर्र के मर्मर स्वर हवा में उठते रहते हैं। ये कौतुक हर साल, साल दर-साल मैं देखती आ रही हूँ कि एक ही साथ सूखे, पीले, पके और नए हरे सुचिक्कन पात डालियों पर संग-संग। अलग होने का ही तो दूसरा नाम है जुड़ना। तब क्या ये अजब नहीं कि हम अलग होने को लेकर इतना भावुक हो उठे। मेरे मन में बार-बार सवाल उठता है कि क्यों औचित्य के इस सबसे सरल, सहज और नित्य सत्य के प्रति हम, न जाने कब से.... आज भी भावुक हो उठते हैं।" इन निबंधों में प्राकृतिक सौंदर्य के साथ जीवनानुभवों का अद्भुत सामंजस्य हुआ है। कुछ निबंधों में शमशेरजी के साथ बीते दिनों की स्मृतियाँ हैं तो कुछ में प्रकृति का रागात्मक चित्रण। 'कुछ अंतरंग रंग कृष्णा सोबती के संग' निबंध में कृष्णा सोबती के अहमदाबाद प्रवास का सुन्दर वर्णन बिम्बात्मक ढंग से किया गया है। नपी-तुली भाषा का प्रयोग इन निबंधों की प्रमुख विशेषता है।

विज्ञान विषयक निबंधों के साथ-साथ गुजरात में दर्शन विषयक निबंध भी लिखे गए हैं। दर्शन विषयक निबंधकारों में डॉ.दिनेशचन्द्र और गिरधारी लाल शर्राफ का नाम लिया जा सकता है। 'प्रतिमा विज्ञान एवं दर्शन' डॉ. दिनेशचन्द्र का निबंध-संग्रह है। 'शिव सत्य है, सुन्दर है', 'प्रकृति के रूप एवं देव पूजा', 'प्रकृति के रहस्य एवं शिव', 'शिव एवं शक्ति दर्शन' तथा 'शिव प्रतिमाएँ दृविज्ञान एवं शिव' आदि निबंध दार्शनिक पृष्ठभूमि लिए हैं। अधिकतर निबंधों में शिव की महिमा का गान किया गया है। 'शिव सत्य है, सुन्दर है' निबंध में शिव की महिमा का रसात्मक वर्णन किया गया है– "शिव दर्शन के ज्ञाता उनकी मनोहर

छवि का रसपान करते हैं और उनके वीभत्स रूप से किंचित विचलित नहीं होते। संसार के विष का पान करने वाला महादेव महायोगी है, जिसने सागर के समस्त विष को अपने कण्ठ में केन्द्रित कर दिया है और देवों को जीवन दान दिया है। उसने आकाश से धरा पर गिरने वाली गंगा को अपने जटाजूट में समेट लिया है और अपनी धारा को अपने सिर से संसार के कल्याण के लिये प्रवाहित किया है।"

गिरधारी लाल सर्राफ का 'चलचे-चलते' निबंध-संग्रह भी विज्ञान विषयक निबंध-संग्रह है। गिरधारीलाल जी घुमक्कड़ प्रकृति के थे। उन्होंने अपने जीवन में कई यात्राएँ करके अनुभव की पूँजी पाई है। इन अनुभवों को ही उन्होंने निबंध का रूप दिया है। 'चलते-चलते', 'लोटा डोरी', 'क्या आपने दिवाली मनाई', 'मन', 'हिमालय की गोद में' इस संग्रह के महत्वपूर्ण निबंध हैं। इन निबंधों में विनोदपूर्ण ढंग से व्यंग्य किया गया है। भाषा में प्रवाहिता सहज ही देखी जा सकती है।

पंकज त्रिवेदी ने हिन्दी के ललित निबंधकारों में अपनी खास जगह बनाई है। वे एक कवि, लघु-कथाकार, कहानीकार, निबंधकार और श्रेष्ठ अनुवादक भी हैं। अब तक उनके दो निबंध-संग्रह प्रकाशित हुए हैं- 'झरोखा' और 'मन कितना वीतरागी'। 'झरोखा' निबंध संग्रह के लिए सन् 2010 में उनको हिन्दी साहित्य अकादमी, गुजरात की ओर से सम्मानित भी किया गया है। इस निबंध संग्रह में कुल पच्चीस निबंध संकलित है। 'चाय पीने का मेरा भी मन है', 'तितलियों के देश में', 'हृदय के हस्ताक्षर', 'मेरे पास आकाश है', 'एक नए सूर्य के साथ', 'आभासी प्रतिबिंब', 'रंग और समुद्र' आदि निबंध बहुत चर्चित बन पड़े हैं। 'मन कितना वितरागी' निबंध-संग्रह में 130 लघु निंबध संकलित हैं। ये अपने आप में लघु चिंतनात्मक निबंध हैं। निबंध उनकी पसंदीदा विधा है। उन्होंने 'मन कितना वीतरागी' निबंध-संग्रह में 'मेरी निबंध यात्रा' शीर्षक से भूमिका लिखी है। जिसमें वे लिखते हैं– "निबंध हमेशा मेरे अंदर व्याप्त रहता है। निबंध का निर्बंध होना ही मेरी सृजन प्रक्रिया का सरोकार और सतर्कता है। निबंध में लय है, संगीत है, कल्पना है, प्रकृति है, प्राण है और निबंध की सुंदरता शब्द और चयन की मुखरता से सौंदर्य का पर्याय बन जाती है। निबंध मेरी रग-रग में हैं क्योंकि मुझे संगीत प्रिय है, प्रकृति का तादात्म्य है, सांस्कृतिक विरासत की पूंजी है। निबंध का स्वर मेरी आत्मा को गुनगुनाने के लिए प्रेरणा देता है।" लेखक अपने इन दोनों संग्रहों के निबंधों में साधारण लगने वाले विषय का सूक्ष्म अवलोकन करके

भावधारा में ले जाकर छोड़ देता है, जहाँ पाठक निमग्न होकर अपने को तरोताजा महसूस करता है। पंकज त्रिवेदी ने जिंदगी के झरोखे से जो कुछ देखा है, अनुभव किया है, उसकी पूर्ण अभिव्यक्ति का प्रमाण ये निबंध हैं।

गुजरात में व्यक्तिप्रधान और विषयप्रधान निबंधों के साथ-साथ समीक्षात्मक निबंध भी लिखे गए हैं। समीक्षात्मक निबंध विविध विषयों पर लिखे गए हैं। समीक्षात्मक निबंधों को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है- 1. शोधपरक समीक्षात्मक निबंध और 2. पुस्तक समीक्षा।

डॉ. गोवर्धन शर्मा और भावना मेहता द्वारा लिखित 'कच्छ : लोक एवं संस्कृति' में लोक एवं प्रदेश, इतिहास दर्शन, साहित्य एवं संगीत, कला और स्थापत्य तथा संस्कृति और लोकोत्सव जैसे विषयों पर पच्चीस निबंध संकलित हैं। इसी क्रम में पं.बालशास्त्री 'प्रेमी' जी का नाम आता है । उनके द्वारा लिखित 'मन मुकुर' निबंध संकलन में पच्चीस निबंध सग्रंहीत हैं। इन निबंधों के केन्द्र में है प्रेम। प्रेम से ही आनंद की प्राप्ति की जा सकती है। इन निबंधों में कहीं संस्मरणात्मक शैली, तो कहीं विवरणात्मक शैली, तो कहीं व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग हुआ है।

समीक्षात्मक निबंधों में डॉ. रामकुमार गुप्त और कमल मेहता का उल्लेखनीय योगदान रहा है। 'मोरार साहब' डॉ. रामकुमार गुप्त का समीक्षात्मक निबंध है। कमल मेहता ने 'गरीबदास' शीर्षक से समीक्षात्मक निबंध लिखा है। डॉ.कृष्णा गोस्वामी कृत 'अध्ययन और अनुशीलन' उल्लेखनीय समीक्षा-निबंध है। मालती दुबे के तीन समीक्षात्मक निबंध प्राप्त होते हैं 1. 'समन्वित स्वर, 2. 'वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिन्दी' और 3. 'चिंतन के स्वर'। 'चिंतन के स्वर' निबंध-संग्रह में कुल चौदह निबंध संकलित है। साहित्य और संस्कृति, इतिहास और लोकगीतों का विश्लेषण की भावधारा से आप्लावित यह निबंध-संग्रह प्राचीन और नवीन ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्रों का परिचय देता है। इन निबंधों में लेखिका का चिन्तन-मनन सहज ही देखा जा सकता है। 'साहित्य, शिक्षा और जीवन मूल्य' डॉ. हरीश शुक्ल का निबंध-संग्रह है। इस संग्रह में संग्रहीत सभी निबंध समीक्षात्मक हैं। दक्षा जानी कृत 'विविधा' साहित्यिक निबंधों का ऐसा संकलन है, जिसके सातों निवंध समीक्षात्मक हैं। 'समकालीन हिन्दी समीक्षा एक दृष्टिकोण' डॉ. ईश्वरसिंह चौहान का महत्वपूर्ण समीक्षात्मक निबंध-संग्रह है। इस निबंध-संग्रह में 26 निवंध भिन्न-भिन्न विषय से संबंधित हैं। ये निबंध अधिकतर हिन्दी के चर्चित कवियों पर लिखे गए हैं। डॉ. दिलीप मेहरा कृत 'वंग्मय वाटिका के विविध

रंग' समीक्षात्मक निबंध-संग्रह है। समीक्षात्मक निबंधों में डॉ. धीरज वणकर का नाम उल्लेखनीय रहा है। उनके दो समीक्षात्मक निबंध संग्रह प्राप्त होते हैं— 1.'गुजराती दलित साहित्य के विविध संदर्भ', 2. 'हिन्दी गुजराती दलित साहित्य के विविध संदर्भ'। समकालीन साहित्य में बहु-चर्चित दलित विमर्श को केन्द्र में रखकर डॉ. धीरज ने अपने समीक्षात्मक निबंधों की रचना की है। डॉ.नयना डेलीवाला कृत 'संघर्ष और सृजन के अंतर्द्वंद' समीक्षात्मक निबंध हमें प्राप्त होते हैं। इसमें सत्रह समीक्षात्मक निबंध संकलित हैं।

यद्यपि समीक्षात्मक निबंधकारों की सूची बहुत लंबी है। गुजरात के हिन्दी निबंधकारों में और भी कई नाम जुड़ सकते हैं। जितनी सामग्री उपलब्ध हो सकी उसी के आधार पर यह लेख लिखा गया है, यही इस लेख की मर्यादा कही जा सकती है। वर्तमान समय में नये-नये रचनाकार साहित्य की भिन्न-भिन्न विधा में अपनी कलम चला रहे हैं, यह बहुत ही अच्छी बात है। आने वाले दिनों में निबंध विधा भी पल्लवित होकर वटवृक्ष बनेगी ऐसी उम्मीद तो की जा सकती है।।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि गुजरात के लिखे गए हिन्दी निबंध ने विगत वर्षों में आशातीत प्रगति की है। इन निबंधकारों ने प्रकृति, समाज, जीवन, संस्कृति, सभ्यता, राजनीति, कला जैसे विषयों को लेकर निबंध लिखें हैं। इन निबंधकारों ने अपनी मर्यादा में रहकर हिन्दी निबंध विधा को लोकप्रिय बनाने का भरसक प्रयत्न किया है।

सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग, गुजरात विश्वविद्यालय,
अहमदाबाद